



रक्षा नरियात को बढ़ावा

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सतह से हवा में मार करने वाली आकाश मिसाइल (Akash Missile) के नरियात को 'मित्र देशों' (Friendly Countries) के लिये मंजूरी प्रदान कर दी है तथा नरियात में तीव्रता लाने हेतु रक्षा मंत्री की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है।

- यह समिति बाद में विभिन्न देशों के लिये स्वदेशी प्लेटफॉर्मों द्वारा नरियात करने का अधिकार प्रदान करेगी।

प्रमुख बडि:

- आकाश मिसाइल का नरियात संस्करण वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बलों में शामिल आकाश मिसाइल से अलग होगा।
- विभिन्न देशों द्वारा जारी RFI/RFP में भाग लेने के लिये मंत्रिमंडल की मंजूरी भारतीय नरिमाताओं को सुविधा प्रदान करेगी।
 - रक्वेस्ट फॉर इन्फॉर्मेशन (Request For Information- RFI) का उपयोग तब किया जाता है जब मालिक कई ठेकेदारों को संभावित समाधान प्रदान करना चाहता है, जबकि रक्वेस्ट फॉर प्रोपोजल (Request for Proposal-RFP) का उपयोग किसी परियोजना के लिये स्वीकृति देने हेतु बोली प्रक्रिया में किया जाता है।
- अब तक भारतीय रक्षा वस्तुओं का कुछ ही अंश या भाग का नरियात किया जाता था। बड़े स्तर पर इनका नरियात काफी कम था।
 - मंत्रिमंडल की इस पहल से देश को अपने रक्षा उत्पादों को बेहतर बनाने और उन्हें विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद मिलेगी।
 - यह आत्मनिर्भर भारत (Atma Nirbhar Bharat) के लक्ष्य को प्राप्त करने की दशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।
- आकाश के अलावा सरकार की रुचि अन्य प्रमुख रक्षा सामग्रियों जैसे- तटीय नगरानी प्रणाली, रडार और वायु प्लेटफॉर्मों के नरियात में भी है।

आकाश मिसाइल

- आकाश भारत की पहली स्वदेश नरिमिति मध्यम श्रेणी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल है जो कई दशाओं, कई लक्ष्यों को नशाना बना सकती है।
 - सभी प्रकार के मौसम में प्रयुक्त होने वाली यह मिसाइल ध्वनिकी गति से 2.5 गुना तीव्र गति से लक्ष्य को भेद सकती है तथा नमिन, मध्यम और उच्च ऊँचाई पर लक्ष्यों का पता लगाकर उन्हें नष्ट कर सकती है।
- आकाश मिसाइल प्रणाली को भारत के 30 वर्षीय एकीकृत नरिदेशति-मिसाइल विकास कार्यक्रम (Integrated Guided-Missile Development Programme - IGMDP) के हस्से के रूप में डिजाइन और विकसित किया गया है, जिसमें नाग, अग्नि, त्रिशूल और पृथ्वी जैसी अन्य मिसाइलें भी शामिल हैं।

रेंज और क्षमता:

- नाभिकीय क्षमता युक्त आकाश मिसाइल 18 कर्मी. की अधिकतम ऊँचाई पर 2.5 मैक (लगभग 860 मीटर प्रतिसेकंड) की गति से उड़ने में सक्षम है।
- यह दुश्मन के हवाई ठिकानों को लक्ष्य बना सकती है जैसे- लड़ाकू जेट, ड्रोन, क्रूज़, हवा से सतह में मार करने वाली मिसाइलों के साथ-साथ 30 किलोमीटर की दूरी से बैलस्टिक मिसाइलों को भेदने में भी सक्षम है।

आकाश मिसाइल की विशेषताएँ:

- इस मिसाइल को मोबाइल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से युद्धक टैंकों या ट्रकों से लॉन्च किया जा सकता है। इसमें लगभग 90% तक लक्ष्य को भेदने की सटीकता की संभावना है।
- इस मिसाइल का संचालन स्वदेशी रूप से विकसित रडार 'राजेंद्र' द्वारा किया जाता है यह रडार प्रणाली समूह या स्वायत्त मोड में कई दशाओं से अत्यधिक लक्ष्यों को भेदने में सक्षम है।
- यह मिसाइल ठोस ईंधन तकनीक और उच्च तकनीकी रडार प्रणाली के कारण अमेरिकी पैट्रियट मिसाइलों (US' Patriot Missiles) की तुलना में सस्ती और अधिक सटीक है।

वनिर्माण :

- मसिाइल प्रणाली को **रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन** (Defence Research and Development Organisation- DRDO) द्वारा डज़िाइन और वकिसति कयिा गया है ।

भारतीय रक्षा नरियात:

- **मार्च 2020** में **स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रसिर्च इंस्टीट्यूट** (SIPRI) द्वारा प्रकाशति आँकड़ों के अनुसार, हथयिार नरियातक देशों की सूची में भारत **वर्ष 2015-2019** तक 19वें स्थान पर तथा **वर्ष 2019** में 23वें स्थान पर रहा ।
 - रक्षा मंत्रालय की 2018-19 की वार्षकि रपिर्ट के अनुसार, रक्षा नरियात 10,745 करोड़ रुपए रहा जसिमें वर्ष 2017-18 (100682 करोड़ रुपए) की तुलना में अधकि (100%) की वृद्धि हुई और यह वर्ष 2016-17 (1,521 करोड़ रुपए) से 700% अधकि है ।
 - वैश्वकि हथयिारों के नरियात में भारत की हसिसेदारी मात्र **0.17%** है ।
- वर्तमान सरकार भारत में रक्षा वनिर्माण पर ज़ोर दे रही है ताकि देश के वनिर्माण आधार का नरिमाण कयिा जा सके तथा देश में ही युवाओं के लयि रोज़गार सुनश्चिति कयिा जा सके और भारत के हथयिारों के आयात बलि को कम कयिा जा सके ।
 - भारत का लक्ष्य **वर्ष 2025** तक **5 बलियिन** अमेरकि डॉलर मूल्य के सैन्य हार्डवेयर का नरियात करना है ।

आगे की राह

- नजिी उद्योग की अधकि-से-अधकि भागीदारी हेतु एक स्थरि मैक्रो-आर्थकि और राजनीतकि वातावरण नरिमति करने के साथ ही एक पारदर्शी कारोबारी माहौल नरिमति करने की आवश्यकता है जो नषिपक्ष प्रतसिपर्द्धा को प्रोत्साहति करे ।

स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस